आलोचना की यात्रा में

हिन्दी ग़ज़ल

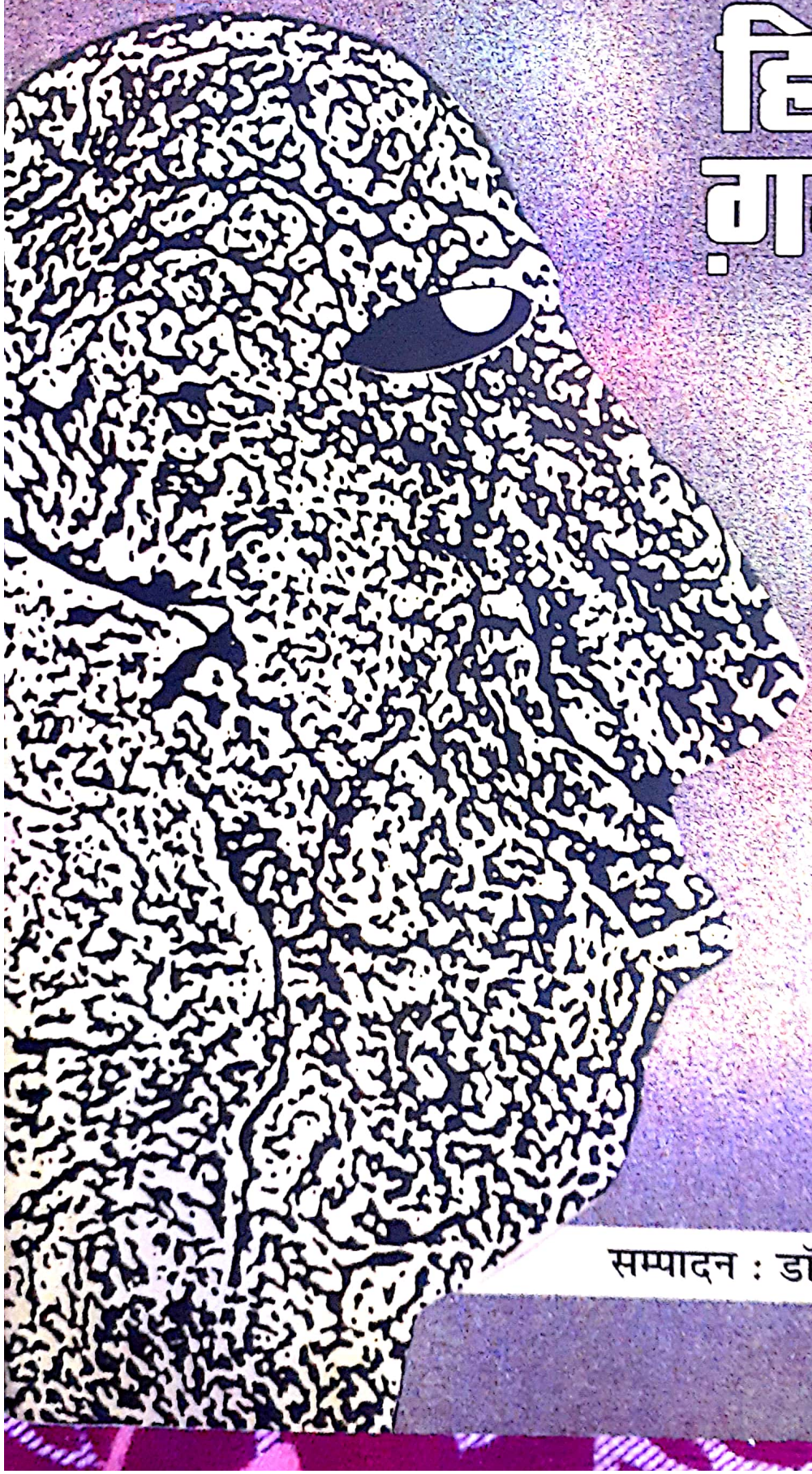

सम्पादन : डॉ. जीवन सिंह

CamScanner

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
एफ़-77, सेक्टर 9, रोड नं. 11,
करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2503989, 98290-18087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © डॉ. जीवन सिंह

प्रथम संस्करण : जुलाई, 2017

ISBN : 978-93-86470-75-1

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : तरु टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 250/-

ALOCHANA KI YATRA MEIN HINDI GHAZAL (CRITICISM) Edited by Dr. Jeevan Singh

अनुक्रम

भूमिका : हिन्दी ग़ज़ल और उसकी आलोचना प्रकृति	–जीवन सिंह	7
किसान जीवन का संघर्षचेता ग़ज़लकार बल्ली सिंह चीमा	–नचिकेता	29
माधव कौशिक की ग़ज़लें–नए समाज की आमद	–ज्ञानप्रकाश विवेक	50
इतिहास के भीतर के रचनाकार : रामकुमार कृषक	–अनिल राय	60
विनय मिश्र : हौसले का एक जुगनू भी बहुत है...	–पंकज गौतम	88
मृदुला अरुण : बाकी सफ़र की तलाश	–अरविंद त्रिपाठी	111
गहरी अन्तर्यात्रा से उपजी संवेदना के ग़ज़लकार...	–हरेराम समीप	120
ये बात कह रहा हूं मैं होशो–हवास में : अदम गोंडवी	–श्रीधर मिश्र	134
बहुआयामी ग़ज़लकार पुरुषोत्तम प्रतीक	–ब्रजेश पाण्डेय	154
जनवादी चेतना के ग़ज़लकार : हरेराम समीप	–वरुण कुमार तिवारी	169
कमल किशोर श्रमिक का ग़ज़ल–संसार	–प्रभा दीक्षित	183
अब भी थका नहीं हूं : सुरेन्द्र शलेष	–साएमा बानो	196

CamScanner

• साएमा बानो

अब भी थका नहीं हूं : सुरेन्द्र श्लेष

समकालीन परिवेश द्वन्द्व व सामंजस्य दोनों दृष्टियों से आधुनिक है। इस दौर में जहां विज्ञान और तकनीक का प्रभाव मानव जीवन को सुविधापूर्ण और सुरक्षित बनाने में लगा है, वहीं उनका दुष्प्रभाव जीवन के अस्तित्व को बार-बार चुनौती दे रहा है। जनसंचार और मीडिया के साधनों के तीव्र प्रसार और उपयोग-दुरुपयोग की गिरफ़्त में आज सारी दुनिया आ चुकी है। ऐसे में निरंतर होने वाले इन बदलावों का सीधा प्रभाव साहित्य पर पड़ना कोई आश्चर्य नहीं है। यूं तो 'चित्तवृत्तियों के परिवर्तन के साथ साहित्य में परिवर्तन' सदियों से होता रहा है, किंतु आज का यह परिवर्तन पिछले बदलावों से इस अर्थ में भिन्न है कि एक तो इस परिवर्तन की गति बहुत तेज़ है और स्वरूप बेहद सूक्ष्म, एवं जटिल इसकी दिशा को समझ पाना लगभग बहुत मुश्किल होता जा रहा है।

ज़ाहिर है कि वर्तमान साहित्य का विषय-क्षेत्र किसी एक देश के सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्य तक सीमित न होकर सारे विश्व को अपनी परिधि में समाहित कर रहा है। गद्य की अपेक्षा कविता इस परिवर्तन की सूक्ष्म-से-सूक्ष्म परतों में ज्यादा प्रवेश करती है और उसकी अभिव्यक्ति-शैली उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित भी करने का प्रयास करती है। दरअसल आज की कविता समाज की पुरातन मान्यताओं, टूटते परंपरागत मूल्यों, बदलते मानवीय संबंधों, बिखरी हुई दुहरी ज़िंदगी तथा सामाजिक-राजनीतिक भ्रष्टाचार से क्षुब्ध जीवन की अभिव्यक्ति है। आज का कवि एक ऐसा जागरूक इंसान है जो अपने हृदय और मन को किसी अंकुश में बांधे बिना चीजों और घटनाओं का अपने ढंग से निरीक्षण करता है। संदेह नहीं कि समकालीन कविता चेतना और यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ ही अनुकरण, चमत्कार-प्रदर्शन और आत्मप्रदर्शन के प्रभाव से ख़ाली नहीं है। इसमें स्वीकृति,

CamScanner